

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

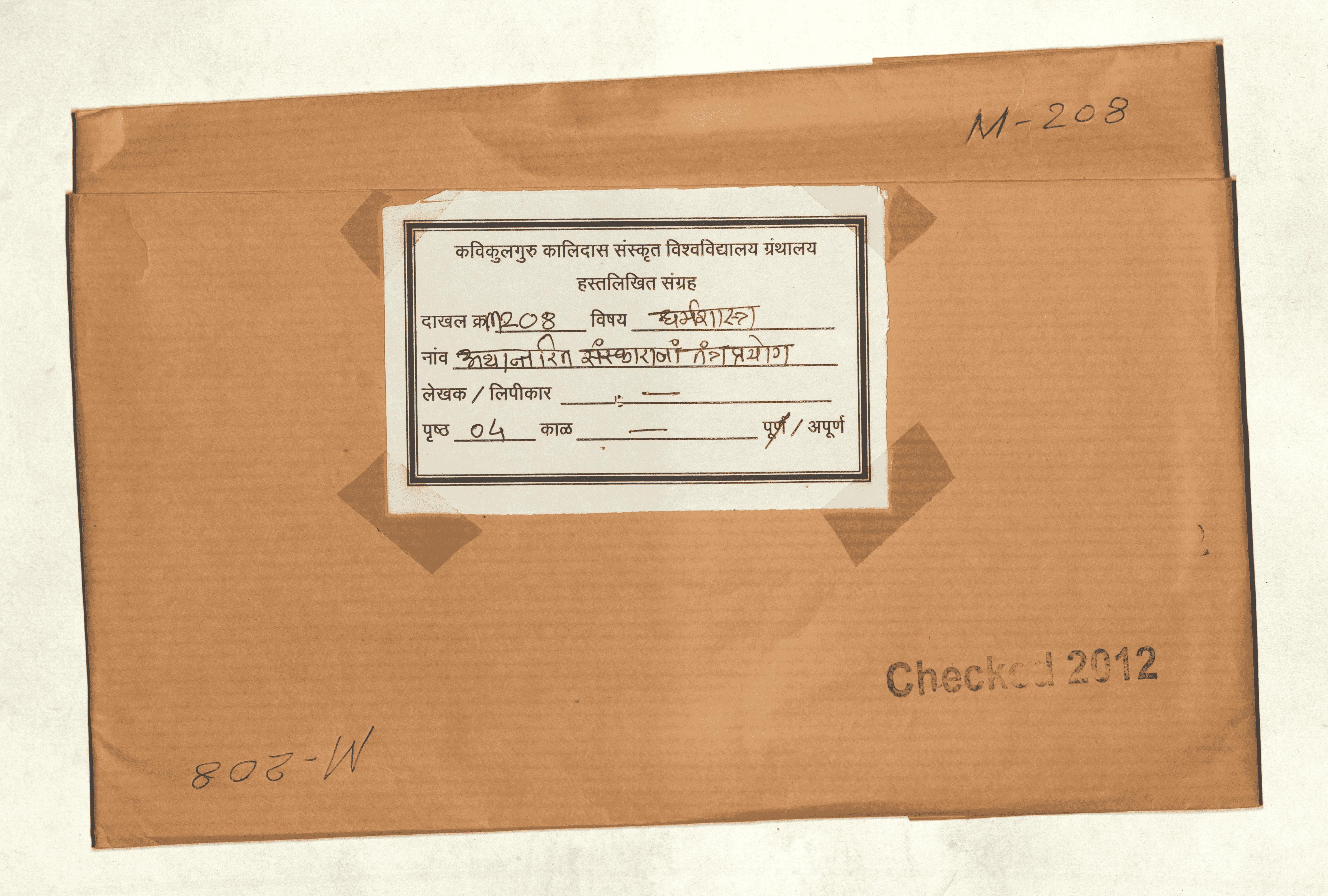
https://www.namami.gov.in/

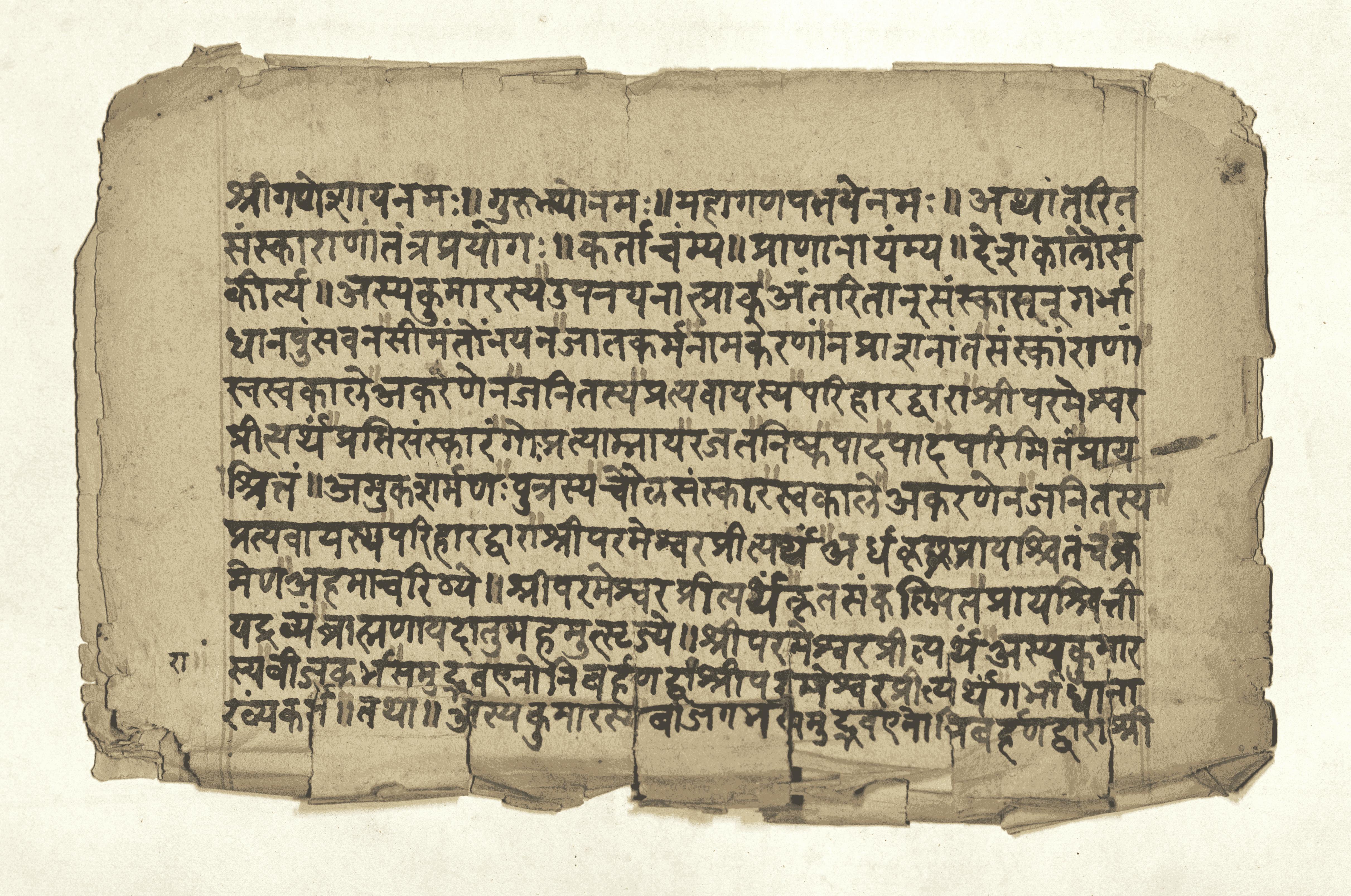
Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/





परमेन्द्रम्भान्धः वंत्तवनारलं कर्न ॥ जारन मारस्य वे तिकागि निवरीय निवरण ग्रेजी परमेन्द्रमी तथे सीमे तो नचनार्य कर्म ॥ तथा ॥ अरयह मारस्या जी व पान जित दे विवर्ण विवरण विवरण विवरण विवरण कर्म ॥ तथा ॥ अरयहि सो जित्र हिंदू राष्ट्रीय रमेन्द्रम्भ ॥ तथा ॥ अरयहि सो अर्थ के समुद्र वे नो जित्र हिंद्रम्भ ॥ तथा ॥ अर्थ हिंद्रम्भ मेन्द्रम्भ मेन्द्रम्भ ॥ तथा ॥ समार्थ हिंद्रम्भ मेन्द्रम्भ मेन्द्रम्

द्वारिय ॥अग्नर्ते व्यर्थ गर्भाधानारि जनमारानां तसंस्काराणां विहितह वनं क्रिंग्रं उत्तार सक्तं कर्मकार व्यापति प्रान्त प्राप्त प्राप्त

नाम् भंताकाम वनाया॥ बान् वाक्ष्य सुद्धि यसुद्धि देव सुद्धः॥ अः य नापातनास्य पंत्रणस्कर यामि ॥ वीर भ्रत्याती ॥ जुवः प्रजापतिना ० ॥ सुवः प्रवाण पंरावन ॥ वन्याति ॥ आंडीस्छः ॥ श्वाव सत् ॥ अनिष्ठ्य हृद्याति ० ॥ स्त्रते ॥ सीमेगोन्न यनं ॥ तस्याः पुरस्ता स्त्रत्यं पुरवित्त छन् ॥ सीमेत्रेष्ठं । यत् ॥ अञ्ज्ञ र्त्रतं स्त्रामह इसह ० सीव्य स्त्राम् वृत्यं ॥ योस्ति त्रे ० सामित्रं अस्ति । अस्य स्त्रामह इसह ० सीव्य स्त्रामह महिष्ठ् षः॥ जातव स् ॥ अञ्ज्ञानव ७ वदे विष्ठ जीवस इस्तर्यं सुव्य ॥ अने महिष्ठ् षः॥ जातव स्त्रा ॥ अञ्ज्ञानव ७ वदे विष्ठ जीवस इस्तर्यं सुव्य महिष्ठ । स्वापे ॥ स्त्री व र्यातं ॥ तिलह वप द्वास्य ॥ अस्य कुमारस्य शं तिमक्ति । दिरशी गणे स्वः संरक्षणार्थं सर्वपिष्ठे । स्वापंत्रा स्त्राह्ण ॥ १ ॥ ना नत्यागः ॥ ॥ १॥ आक्रियं प्रश्निः स्वाहा ॥ १ ॥ क्रियां प्रावः विष्ठ विष्ठ विष्ठा । १ ॥ क्रियें वेदका । प्रावित्तः स्वाहा ॥ १ ॥ क्रियें वेदका । प्रावित्तः स्वाहा ॥ १ ॥ क्रियें वेदका । प्रावित्तः स्वाहा ॥ १ ॥ क्रियें विष्ठ ।

```
[OrderDescription]
,CREATED=16.09.19 14:22
,TRANSFERRED=2019/09/16 at 14:25:40
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0001835
,Book Name=M-208-ATHANTARIN SANSKARAN MANTRA PRAYOG
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
```